एम.ए. हिंदी (MAHD/MAHV/MAHDOY)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–14 (MHD-14)

हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)

सत्रीय कार्य (जुलाई–2026 और जनवरी–2027) सत्रों के लिए

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि

जुलाई 2026 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2027
जनवरी 2027 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2027

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

एम.एच.डी.–14 : हिंदी उपन्यास–1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य 2026–27

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–14 / टी.एम.ए. / 2026–27

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **अंक : 100**

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10X4=40

(क) सुमन से सोचा, मैं कैसी हतभागिनी हूँ। एक वह स्त्रियाँ हैं, जो आराम से तकिए लगाए सो रही हैं, लौंडिया पैर दबाती हैं। एक मैं हूँ कि यहाँ बैठी हुई अपने नसीब को रो रही हूँ। मैं यह सब दुःख क्यों झेलती हूँ? एक झोपड़ी में टूटी खाट पर सोती हूँ, रूखी रोटियाँ खाती हूँ। नित्य घुड़कियाँ सुनती हूँ, क्यों? मर्यादा-पालन के लिए ही न? लेकिन संसार मरे इस मर्यादा-पालन को क्या समझता है? उसकी दृष्टि में इसका क्या मूल्य है? क्या यह मुझे छिपा हुआ है? दशहरे के मेले में, मोहर्रम के मेले में, फूल बाग में, मन्दिरों में, सभी जगह तो देख रही हूँ। आज तक मैं समझती थी कि कुचरित्र लोग ही इन रमणियों पर जान देते हैं, किन्तु आज मालूम हुआ कि उनकी पहुँच सुचरित्र और सदाचार-शील पुरुषों में भी कम नहीं है। वकील साहब कितने सज्जन आदमी हैं, लेकिन आज वह भोलीबाई पर केसे लट्टू हो रहे थे।

(ख) क्षण मात्र में ज्ञानशंकर के विचारों ने पलटा खाया। जब तक उन्हें शंका थी कि राय साहब दम तोड़ रहे हैं तब तक वह उनकी प्राण-रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। जब बाहर खड़े-खड़े निश्चय हो गया कि राय साहब के प्राणान्त हो गये तब वह अपनी जान की खैर मनाने लगे। अब उन्हें सामने देखकर क्रोध आ रहा था कि यह मर क्यों न गये! इतना तिरस्कार, इतना मानसिक कष्ट व्यर्थ सहना पड़ा! उनकी दशा इस समय उस थके-माँदे हलवाहे की-सी हो रही थी जिसके बैल खेत से द्वार पर आकर विदक गये हों, दिन-भर के कठिन परिश्रम के बाद सारी रात अन्धेरे में बैलों के पीछे दौड़ने की सम्भावना उसकी हिम्मत को तोड़े डालती हो।

(ग) संसार में कौन है, जो कहे कि मैं गंगाजल हूँ। जब बड़े-बड़े साधू-सन्यासी माया-मोह में फँसे हुए हैं तो हमारी तुम्हारी क्या बात है। हमारी बड़ी भूल यही है कि खेल को खेल की तरह नहीं खेलते। खेल में धाँधली करके कोई जीत ही जाए, तो क्या हाथ आएगा? खेलना तो इस तरह चाहिए कि निगाह जीत पर रहे; पर हार से घबराए नहीं, ईमान को न छोड़े। जीतकर इतना न इतराए कि अब कभी हार होगी ही नहीं। यह हार-जीत तो जिंदगानी के साथ है। हाँ, एक सलाह की बात कहता हूँ। तुम ताड़ी की दुकान छोड़कर कोई दूसरा रोजगार क्यों नहीं करते?

(घ) मैं कुछ नहीं चाहती। मैं उस घर का एक तिनका भी अपने साथ न ले जाऊँगी। जिस चीज पर मेरा कोई अधिकार नहीं, वह मेरे लिए वैसी ही है जैसी किसी गैर आदमी की चीज। मैं दया की भिखिरिणी न बनूँगी। तुम इन चीजों के अधिकारी हो, ले जाओ। मैं जरा भी बुरा नहीं मानती। दया की चीज न जबरदस्ती दी जा सकती है, न जबरदस्ती ली जा सकती है। संसार में हजारों विधवाएँ हैं, जो मेहनत-मजूरी करके अपना निर्वाह कर रही हैं। मैं भी वैसे ही हूँ। मैं भी उसी तरह मजूरी करूँगी और अगर न कर सकूँगी, तो किसी गड्ढे में डूब मरूंगी। जो अपना पेट भी न पाल सके, उसे जीते रहने का, दूसरो ंका बोझ बनने का कोई हक नहीं है।

2. ''प्रेमचंद ''कथा सम्राट हैं'' इस कथन की पुष्टि कीजिए। 10

3. 'गबन' मध्यवर्गीय नारी मुक्ति का एक ज्वलंत दस्तावेज है। इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 10

4. 'गोदान' की पात्र योजना पर विचार कीजिए। 10

5. 'रंगभूमि' में राष्ट्रीय आंदोलन का चित्रण किस तरह हुआ है? संक्षेप में उत्तर दीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5X4=20

(क) प्रेमचंद के निबंध

(ख) 'प्रेमाश्रम' का कथानक

(ग) 'कर्मभूमि' की मूल संवदेना

(घ) 'सेवासदन' की मूल समस्या